INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

Level – 1

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 5

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – I**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – I भर्ती परीक्षा"** में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें – https://wa.link/hs2x82

Online Order करें – https://rb.gy/m9e4br

मूल्य : ₹	***संस्करण : नवीनतम***

क्र. सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	मनोविज्ञान व शिक्षा मनोविज्ञान	1
2.	बाल विकास • वृद्धि एवं विकास की संकल्पना • विकास के विभिन्न आयाम एवं सिद्धांत • विकास को प्रभावित करने वाले कारक • अधिगम से उनका सम्बन्ध	10
3.	वंशानुक्रम एवं वातावरण की भूमिका	26
4.	व्यक्तिगत विभिन्नता	29
5.	व्यक्तित्व	32
6.	बुद्धि की संकल्पना	37
7.	विविध अधिगम कर्ताओं की समझ	44
8.	अधिगम में कठिनाइयाँ	49
9.	समायोजन की संकल्पना एवं तरीके	51
10.	अधिगम • अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक • अधिगम के सिद्धांत एवं इनके निहितार्थ • बच्चे सीखते कैसे हैं ?	55

	• अधिगम की प्रक्रियाएं चिंतन, कल्पना एवं तर्क • अभिप्रेरणा	
11.	शिक्षण अधिगम	72
12.	मापन एवं मूल्यांकन • मूल्यांकन (अर्थ व उद्देश्य) • समग्र एवं सतत मूल्यांकन • उपलब्धि परीक्षण का निर्माण • सीखने के प्रतिफल	85
13.	क्रियात्मक-अनुसंधान	96
14.	शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009	98

अध्याय – I

मनोविज्ञान व शिक्षा मनोविज्ञान

मनोविज्ञान

अर्थ – मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है, जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता है।

- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- मन का विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।
- 'साइकॉलोजी' शब्द की उत्पति यूनानी (लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइकी (Psyche) तथा लोगस (Logos) से मिलकर हुई है। 'साइकी' शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है ।
- इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द "साइकॉलोजी" का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

मनोविज्ञान का विकास / उत्पत्ति – प्लेटो , अरस्तू जैसे दार्शनिकों ने मानव मस्तिष्क को समझने व जानने के लिए तथा शरीर से उसका सम्बन्ध समझाने की कोशिश की ।

हिप्पो क्रेटिस ने सबसे पहले इस विचार का प्रतिपादन किया कि मस्तिष्क चेतना का केंद्र है तथा समस्त मानसिक रोगों के कारणों का विवेचन किया । जैसे – कला, रक्त, कफ व पीला पित्त

- सुकरात ने विचार दिया की मनुष्य को स्वयं के बारे में सोचना चाहिए । प्लेटो ने (ई. पूर्व 5 वीं -4 वीं सदी) आत्मा ही परमात्मा का विचार दिया तथा अरस्तू ने 384 ई. पू. से 322 ई. में दर्शनशास्त्र में आत्मा का अध्ययन किया, यही आत्मा का अध्ययन आगे चलकर आधुनिक मनोविज्ञान बना, इसलिए अरस्तू को मनोविज्ञान का जनक माना जाता है तथा अरस्तू के काल से ही मनोविज्ञान जन्म माना जाता है ।

दोस्तों, अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते हैं -

1. **मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान**- यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तू, देकार्ते, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकॉलोजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।
2. **मनोविज्ञान मन /मस्तिष्क का विज्ञान** – यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वी शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
3. **मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान** – यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा है जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना जाता है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मन या मस्तिष्क के विज्ञान की जगह मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया। टिचनर, विलियम जेम्स, विलियम वुट आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार करके कहा कि मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता है।
4. **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की नवीनतम विचारधारा है जिसका समय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आज तक माना जाता है।यह मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा है। इस विचारधारा के समर्थक वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि को माना जाता है। मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार के एक निश्चित विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस विचारधारा को ही एक सर्वमान्य विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

वुडवर्थ –"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा। फिर इसने अपने मन को त्यागा। फिर इसने चेतना खोई। अब वह व्यवहार को अपनाये हुए है।

वॉटसन –"मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान/ सकारात्मक अध्ययन है।"

मैक्डूगल – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं आचरण का विज्ञान है।"

स्किनर – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान है।"

क्रो एवं क्रो - "मनोविज्ञान मानव व्यवहार एवं मानवीय संबंधों का अध्ययन है।"

वुडवर्थ - "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले व्यवहार का अध्ययन है।"

जेम्स ड्रेवर – "मनोविज्ञान शुद्ध विज्ञान है।"

बोरिंग एवं लेंगफील्ड - "मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।"

मन – "मनोविज्ञान वैज्ञानिक खोज से संबंधित है।"

गैरिस – "मनोविज्ञान मानव के प्रत्यक्ष मानव व्यवहार का अध्ययन है।"

मैक्डूगल- मनोविज्ञान जीवित वस्तुओं के व्यवहार का विधायक विज्ञान है।"

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय

1. संरचनावाद सम्प्रदाय –

- यह मनोविज्ञान का प्रथम सम्प्रदाय है जिसके प्रवर्तक विलियम वुण्ट, टिचनर आदि है।
- विलियम वुंट ने 1879 में लिपजिंग नामक स्थान पर जर्मनी में एक प्रयोगशाला बनाई। इनके विचार के अनुसार छोटे – छोटे प्रत्यय मिलकर एक संगठित प्रकार की संरचना का निर्माण कर लेते हैं।
- इस सम्प्रदाय के अनुसार मनुष्य की चेतना में मानसिक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। चेतना में संवेदना, प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना(भाव) आदि सम्मिलित हैं। संरचनावाद में अंतर दर्शनात्मक विश्लेषण के द्वारा मन और चेतना के स्वरूप को जानने का प्रयास किया जाता है।

2. प्रकार्यवाद सम्प्रदाय –

- इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक विलियम जेम्स हैं। (अमेरिकी विद्वान)
- प्रकार्यवाद सम्प्रदाय के अनुसार मानसिक क्रियाएँ गतिशील और सप्रयोजनीय होती हैं।
- प्रकार्यवादियों ने संपूर्ण व्यक्ति के अध्ययन पर जोर दिया और मनोविज्ञान तथा जीव विज्ञान में घनिष्ठ संबंध स्थापित किया।
- इस संप्रदाय का विकास एवं विशेष प्रचलन में लाने का श्रेय अमेरिकी शिक्षाविद् जॉन डीवी को जाता है।

3. साहचर्यवाद सम्प्रदाय –

- इस सम्प्रदाय की स्थापना जॉन लॉक ने की थी। (इंग्लैण्ड निवासी)
- इसके अंतर्गत स्पंदन तथा स्मृति में संबंध ज्ञात करने के साहचर्य को स्वीकार किया गया है।
- कोई भी बालक जन्म के बाद जिस वातावरण के संपर्क में साहचर्य व्यवहार करता है उसी के अनुसार वह अपना व्यवहार भी करता है।
- जॉन लॉक ने ही कहा था – "जन्म के समय बालक का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है जिस पर वह साहचर्य व्यवहार से अपने अनुभव लिखता है।"

4. व्यवहारवाद सम्प्रदाय –

- इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक जे.बी. वॉटसन को माना जाता है। (अमेरिकी)
- व्यवहारवाद सम्प्रदाय मूर्त यथार्थ तथ्यों की व्याख्या करता है।
- इसके अनुसार मनोविज्ञान प्रकृति विज्ञान की एक विशुद्ध, प्रयोगात्मक शाखा है। जिसका उद्देश्य व्यवहार की व्याख्या, नियंत्रण और उसके विषय में भविष्यवाणी करना है।
- इसके अनुसार परिवेश में आवश्यक परिवर्तन करके किसी भी व्यक्ति को कुछ भी बनाया जा सकता है।
- समर्थक :- ईवान पेट्रोविच पावलव , सी. एल. हल, स्किनर, थार्न डाईक, बोरिंग , वुडवर्थ आदि।

5. गैस्टाल्ट वाद सम्प्रदाय –

- इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक वर्दाइमर हैं। (जर्मनी विद्वान)
- समर्थक :- कोफ्का, कोहलर तथा कुर्त लेविन हैं।
- इस सम्प्रदाय का जन्म जर्मनी में लगभग 1912 ई. में हुआ।

गैस्टाल्ट शब्द – यह जर्मन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ समग्र रूप / आकृति / संरचना/ पूर्णाकार होता है।

- इस सम्प्रदाय के अनुसार मनोविज्ञान को व्यवहार तथा अनुभव के प्रकार का अध्ययन करना चाहिए।
- वर्दिमर ने इस बात का खंडन किया कि प्राणी प्रयास व त्रुटी से सीखता है। इनका मानना था कि प्राणी का सीखना सूझ व अन्तः दृष्टि पर निर्भर करता है।
- पूर्व ज्ञान से सूझ पैदा होती है

  ↓

  इससे नया अनुभव आता है

  ↓

  अतः प्राणी सीखता है।

6. प्रेरक सम्प्रदाय

- इस सम्प्रदाय का प्रतिपादक विलियम मैक्डूगल है।

यह सम्प्रदाय मशीनी या व्यवहार-विचार के बिल्कुल विरुद्ध है। इसे प्रेरक इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह प्रेरणा, कार्य करने या कार्य करने की इच्छा पर बल देता है।

7. मनोविश्लेषणात्मक सम्प्रदाय –

- इस सम्प्रदाय का प्रतिपादक सिगमंड फ्रायड को माना जाता है। (वियना – ऑस्ट्रिया निवासी)
- इस सम्प्रदाय में अचेतन एवं पूर्ण चेतन व्यवहार को सम्मिलित किया गया है।
- इस सम्प्रदाय में व्यवहार निर्धारण तथा व्यक्तित्व को निर्धारित करने वाली मूल प्रवृति कारक को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- इस संप्रदाय में चेतन, अर्द्धचेतन, अचेतन, इदम, अहम्, पराअहम् जैसे विशेष शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- इस संप्रदाय को और अधिक विकसित करने का श्रेय इनके शिष्य जुंग एवं पुत्री अन्नाफ्रायड को जाता है।

मनोविज्ञान की विशेषताएं / प्रकृति

(i) मनोविज्ञान एक अनुप्रयुक्त विज्ञान / व्यवहार का विज्ञान है।

(ii) मनोविज्ञान एक विधायक सकारात्मक विज्ञान है।

(iii) मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार एवं पशु – पक्षियों का भी व्यवहार शामिल है।

(iv) यह भौतिक और सामाजिक दोनों प्रकार के वातावरण का अध्ययन करता है।

शिक्षा के प्रकार :-

1. औपचारिक - स्कूल,
2. अनौपचारिक - परिवार,
3. निरौपचारिक - पत्राचार।

(i) औपचारिक शिक्षा – जिसका समय व स्थान निश्चित हो। जैसे – स्कूल में शिक्षा
(ii) अनौपचारिक शिक्षा – जिसका स्थान व समय निश्चित न हो, जीवन पर्यन्त चलती है, जैसे – परिवार, समाज में।
(iii) निरौपचारिक शिक्षा – दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार व खुले विद्यालय या कॉलेज द्वारा शिक्षा।

शिक्षा मनोविज्ञान :-

मनोविज्ञान के सिद्धांतों को शिक्षा के क्षेत्र में लागू करना ही शिक्षा मनोविज्ञान है।

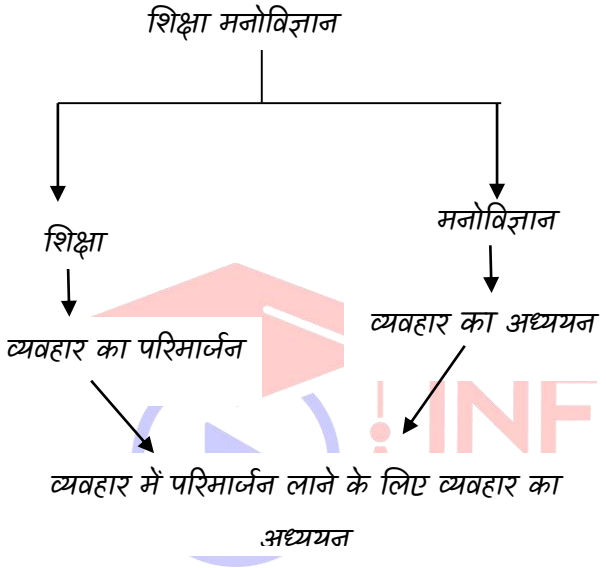

शिक्षा मनोवज्ञान की उत्पत्ति –

- शिक्षा मनोविज्ञान के जनक – थार्नडाईक हैं इनपर प्रकृति वादी रूसो का प्रभाव था ।
- रूसों का शिक्षा पर लिखा गया प्रसिद्ध ग्रंथ- 'एमील (Emile) है।
- रूसो की बुक emil में लिखा था – बालक एक पुस्तक के समान होता है अतः शिक्षक को उसे मध्योपांत तक पढ़ना चाहिए ।
- मनोविज्ञान के सिद्धांतों को शिक्षा के क्षेत्र में लागू करना ही शिक्षा मनोविज्ञान है।
- कॉलसेनिक के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म प्लेटो से हुआ।
- स्किनर के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म अरस्तू से हुआ।
- शिक्षा मनोविज्ञान को लोकप्रिय/प्रचलित बनाने का कार्य रूसों व फ्रोबेल ने किया।
- शिक्षा मनोविज्ञान को मनोवैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने वाले विद्वान पेस्टॉलोजी एवं हरबर्ट हैं।
- आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म अमेरिका में 1900 ई० में हुआ।
- शिक्षा मनोविज्ञान को एक अलग विषय के रूप में मान्यता 1920 ई. में अमेरिका में मिली।
- American Psychological Association America द्वारा 1940 में शिक्षा मनोविज्ञान पर सबसे पहले शोध कार्य प्रारंभ किया गया।
- अमेरिकी शिक्षा शास्त्री जॉन डी. वी. के प्रयोसों से शिक्षण –प्रशिक्षण शुरू हुए ।
- भारत में शिक्षण –प्रशिक्षण का कार्य – 1920 में शुरू हुआ।

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएं -

- **क्रो एवं क्रो** "शिक्षा मनोविज्ञान बालक के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों की व्याख्या एवं वर्णन करती है।"
- **कॉलसनिक** "शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत मनोविज्ञान के अनुसंधानों व सिद्धांतों का शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन किया जाता है।"
- **प्रो.एच.आर. भाटिया-** "शैक्षणिक पर्यावरण में किसी विद्यार्थी या व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन ही शिक्षा मनोविज्ञान है।"
- **स्किनर** "शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व शामिल है।"
- **स्किनर** "शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्तित्व के सभी पहलुओं से संबंधित है।"
- **स्किनर-** "शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों की तैयारी की आधारशिला है।"

स्टीफन – "शिक्षा मनोविज्ञान बालक के क्रमबद्ध शैक्षिक विकास का अध्ययन है

मनोविज्ञान के घटक (चर) 5 हैं -

1. शिक्षक
2. विद्यार्थी (सबसे महत्वपूर्ण घटक)
3. परिस्थितियां
4. पाठ्यचर्या
5. शिक्षण विधियां।इन पांचों घटकों में विद्यार्थी (शिक्षार्थी) सबसे महत्वपूर्ण है।

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र-

1. बालक की अभिवृद्धि व विकास का अध्ययन।
2. बालक की विशेष योग्यताओं का अध्ययन।
3. बालक की रूचियों, अभिरूचियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं, व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन
4. बालक के वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन ।
5. बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक संवेगात्मक विकास का अध्ययन ।
6. विभिन्न शिक्षण विधियों का अध्ययन ।

अध्याय – 2

बाल विकास

- **वृद्धि एवं विकास की संकल्पना -**
- **विकास के विभिन्न आयाम एवं सिद्धांत**
- **विकास को प्रभावित करने वाले कारक**
- **अधिगम से उनका सम्बन्ध**

विकास – विकास को हम एक अवधारणा से कहीं अधिक कह सकते हैं यह कई संरचनाओं और कार्यों को एकीकृत करने की एक जटिल प्रक्रिया है।

- इस विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक ,सामाजिक आदि सभी विकास सम्मिलित होते हैं।
- इसके अतिरिक्त अप्रत्यक्ष रूप से विकास की प्रक्रिया में नैतिक, चारित्रिक तथा भावात्मक विकास इत्यादि सम्मिलित होते हैं।

क्लार्क जे. के अनुसार "विकास बदलाव की ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को इस योग्य बनाती है की वे स्वयं के भाग्य विधाता बन सकें तथा अपने अन्दर की समस्त संभावनाओं को पहचान सकें।"

रॉय एंड राबिन्सन – "किसी भी देश के लोगों के भौतिक, सामाजिक व राजनितिक स्तर पर सकारात्मक बदलाव ही विकास है।"

मुनरो के अनुसार - विकास परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है, जिसमें बच्चा भ्रूण अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक गुजरता है।

हरलॉक – विकास व्यक्ति में नवीन विशेषताओं व योग्यता को प्रस्तुत करता है।

वुडवर्थ – एक बालक का विकास उसके वंशानुक्रम एवं वातावरण का गुणनफल होता है।

note:-विकास वंशक्रम और वातावरण का गुणनफल होता हैं योगफल नहीं।

विकास = वंशानुक्रम x वातावरण
D = H x E

बाल विकास -

अर्थ :- गर्भाकाल से लेकर परिपक्व अवस्था तक का अध्ययन बाल विकास कहलाता है। बालक विकास की प्रक्रिया में विकास के अन्तर्गत किसी बालक का सम्पूर्ण विकास सम्मिलित होता है।

बाल विकास का इतिहास :-

पहली बार 1628 ई. में यूरोपियन विद्वान जॉन कॉमेनियम ने School of Infancy की स्थापना की तथा बाल शिक्षा की तरफ ध्यान दिलाया था तथा बालक को केंद्र समझकर उनके बारे में सोचा। (पुस्तक – The Great Detective)

रूसो ने पुस्तक - EMILE में बच्चों की शिक्षा का अध्ययन किया है।

- काल्पनिक शिष्य का नाम भी EMILE था।
- बाल विकास का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला व्यक्ति – पेस्टोलॉजी थे जिन्होंने प्रथम बार बालक के विकास को लेकर विचार दिया।
- 1774 ई. में अपने ही $3\frac{1}{2}$ वर्षीय पुत्र का अध्ययन किया और उसके विकास को समझते हुए baby biography नामक लेख लिखा अतः बाल मनोविज्ञान के जनक – पेस्टोलॉजी
- पेस्टो लॉजी के लेख को जर्मनी के बाल रोग विशेषज्ञ टाइडमेन ने पढ़ा व समझा तथा उसके आधार पर 'बाल चिकित्सा अनोविज्ञान' की विचारधारा का विकास किया।(बाल चिकित्सा मनोविज्ञान के जनक- टाइडमेन)
- 19 वीं सदी में श्रीमती हरलॉक ने विचार दिया कि एक बालक का विकास गर्भ काल से ही प्रारम्भ हो जाता है।

note : – जब हम बालक के विकास का अध्ययन जन्म के बाद की अवस्थाओं को लेकर करते हैं तो यह बाल मनोविज्ञान कहलाता है और अगर जन्म से पूर्व गर्भावस्था से अध्ययन किया जाता है तो बाल विकास कहलाता है।

- बाल अध्ययन आंदोलन की शुरुआत - अमेरिका में 1893, स्टेनले हॉल ने की थी।
- स्टेनले हॉल ने बाल अध्ययन समिति और बालक कल्याण संगठन की स्थापना की तथा पेडोलोजिकल सेमीनरी नामक पत्रिका में बाल विकास का अध्ययन किया है।
- प्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना - अमेरिका (न्यूयार्क) में 1887 मे हुई थी
- प्रथम बाल निदेशन केंद्र - विलियम हीली - शिकागो 1909
- भारत में बाल अध्ययन की शुरुआत – 1930

बाल विकास की परिभाषा :-

- **हरलॉक –** विकास केवल अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है यह तो परिपक्वता की दिशा में होने वाले परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम है, जिसके द्वारा एक बालक में नई – नई विशेषताएं एवं योग्यताएं प्रकट होती हैं।
- **एंड क्रो –** गर्भावस्था के प्रारंभ से लेकर किशोरावस्था तक बालक के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन ही बाल विकास है।
- **मुनरो के अनुसार -** विकास परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है, जिसमें बच्चा भ्रूण अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक गुजरता है।
- **हरलॉक –** विकास व्यक्ति में नवीन विशेषताओं व योग्यता को प्रस्तुत करता है।
- **बर्क के अनुसार –** जन्म पूर्व की अवस्था से लेकर परिपक्वता की अवस्था तक का अध्ययन बालविकास होता है।

- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार –** बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें गर्भाकाल से लेकर किशोरावस्था के मध्य तक का अध्ययन किया जाता है।
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार –** बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से लेकर परिपक्व अवस्था तक विकासशील मानव का अध्ययन किया जाता है।

❖ वृद्धि / अभिवृद्धि (Growth)

सामान्य रूप से व्यवहारिक शब्दावलियो में जिस के लिए वृद्धि का प्रयोग किया जाता हैं । वह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक परिक्षेपो में अभिवृद्धि की प्रक्रिया कहलाती हैं ।

- अभिवृद्धि की प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी भी बालक का शारीरिक पक्ष सम्मिलत होता है अर्थात् किसी बालक के शरीर की ऊँचाई, आकार तथा भार आदि प्रक्रमों परिवर्तन देखा जाता हैं, अभिवृद्धि कहलाती है।
- फेंक महोदय के अनुसार "अभिवृद्धि cellular Multiplication अर्थात कोशकीय वृद्धि कहा है।

अभिवृद्धि तथा विकास में अन्तर

- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में शारीरिक पक्ष में लम्बाई, चौड़ाई भार इत्यादि सम्मिलित होते हैं।
- विकास - बालक विकास की प्रक्रिया में विकास के अन्तर्गत किसी बालक का सम्पूर्ण विकास सम्मिलित होता है।
- इस विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक सामाजिक आदि सभी विकास सम्मिलित होते हैं।
- इसके अतिरिक्त अप्रत्यक्ष रूप से विकास की प्रक्रिया में नैतिक, चारित्रिक तथा भावात्मक विकास इत्यादि में सम्मिलित होते हैं।
- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास तथा विकास की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास में अन्तर पाया जाता है।
- अभिवृद्धि का शारीरिक विकास केवल वृद्धि (बढना) तथा क्षय (घटना) को प्रदर्शित करता है। जबकि विकास का शारीरिक विकास वृद्धि तथा क्षय को प्रदर्शित करता है।

Growth (अभिवृद्धि)	Development (विकास)
• अभिवृद्धि किसी बालक के केवल शारीरिक पक्षों से संबंधित है ।	• विकास की प्रक्रिया में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक सभी प्रकार के विकास होते हैं ।
• अभिवृद्धि की जन्म से लेकर एक निश्चित समय तक चलती हैं यह निरंतर प्रक्रिया नहीं है ।	• इसमें जन्म से लेकर जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया एकांकी होती है ।	• विकास की प्रकिया का द्रष्टिकोण सर्वांगीण होता है ।
• अभिवृद्धि- परिमाणात्मक रूप को परिवर्तित करती है ।	• विकास की प्रक्रिया बालक के गुणात्मक रूप को व्यक्त करती है
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है ।	• विकास की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता है और न ही इसे मापा- तौला जा सकता है ।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया को मापा – तौला जा सकता है ।	• विकास का घटक अर्जित होता है ।
• अभिवृद्धि का घटक जन्म जात होता है।	• विकास की प्रक्रिया अभिवृद्धि के अंतर्गत सम्मिलित होती है ।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया विकास के अंतर्गत सम्मिलित होती हैं ।	• विकास की प्रक्रिया अभिवृद्धि के अंतर्गत सम्मिलित नहीं होती है

❖ बाल विकास की विभिन्न अवस्थाएं -

1. शैश्वावस्था (जन्म – 6 वर्ष)

Infancy → In fant + Infarty

- पूर्व शेश्वावस्था (जन्म- 2 वर्ष)
- मध्य शेश्वावस्था (2-4वर्ष)
- उत्तर शेश्वसथा (4-6 वर्ष)

2. बाल्यावस्था (6-12वर्ष)

- पूर्व बाल्यावस्था (6-8 वर्ष)
- मध्य बाल्यावस्था (8-10 वर्ष)
- उ. बाल्यावस्था (10-12 वर्ष)

3. किशोरावस्था (12-18 वर्ष)

- पू.किशोरावस्था (12-14 वर्ष)
- म.किशोरावस्था (14-16 वर्ष)
- उ.किशोरावस्था (1618वर्ष)

महत्वपूर्ण कथन :-

न्यूमैन के अनुसार :- "5 वर्ष की अवस्था बालक के शरीर व मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।"

फ्रायड के अनुसार :- "बालक को जो कुछ भी बनना होता है, वह प्रथम 4 या 5 वर्षों में बन जाता है।"

रूसो के अनुसार :- "बालक के हाथ, पैर, नेत्र प्रारम्भिक शिक्षक होते हैं।"

थॉर्नडाईक के अनुसार :- "3 से 6 वर्ष के बच्चे अर्द्धस्वप्न अवस्था में होते हैं।"

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :- "20 वीं शताब्दी को बालकों की शताब्दी कहा गया है।"

किशोरावस्था के नाम से पुकारते है। इस समय इन्हें सही दिशा दी जाये तो ये सफलता को प्राप्त करते है।

जरशील्ड –किशोरावस्था बाल्यावस्था से निकलकर आई परिपक्वता की अवस्था है।

क्रो एवं क्रो – किशोरावस्था वर्तमान की शक्ति और भविष्य की आशा प्रस्तुत करती है।

कॉलसेनिक – किशोरावस्था के लोग प्रोढ़ों को अपने मार्ग में बाधा समझते हैं और वे उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति से रोकते हैं।

रॉस – किशोरावस्था के लोग सेवा के आदर्शों की स्थापना एवं पोषण करते हैं।

अन्य नाम -

- तूफान, तनाव, संघर्ष की अवस्था
- भयभीत अवस्था
- teen एज
- कल्पना के जन्म का दिन
- कामूकता के जागरण की अवस्था
- क्रांतिक अवस्था
- उलझन / अटपटी अवस्था
- बसंत ऋतु की अवस्था
- सुनहरी अवस्था
- दु:खदायी अवस्था (स्टेन हॉल द्वारा)
- समस्या अवस्था (हरलॉक द्वारा)

किशोरावस्था के सिद्धांत – मुख्यत: किशोरावस्था के 6 सिद्धांत हैं-

(i) आकस्मिक विकास सिद्धांत
(ii) क्रमिक विकास सिद्धांत
(iii) सामाजिक प्रक्षेण सिद्धांत
(iv) मनोसामाजिक विकास सिद्धांत
(v) मनोलैंगिक विकास सिद्धांत
(vi) मानवशास्त्रीय विकास सिद्धांत

किशोरावस्था की समस्याएं

(i) शारीरिक परिवर्तन की समस्या
(ii) महत्वाकांक्षा की समस्या
(iii) समायोजन की समस्या
(iv) अस्थिरता
(v) अपराध प्रवृत्ति
(vi) नशाविकार / उपचार समस्या
(vii) आहार विकार की समस्याएं

✓ बिन इटिंग डिसऑर्डर – हर समय अधिक भोजन करना बिना टेंशन के

किशोरावस्था की विशेषताएं – किशोरावस्था के आते ही किशोर के शरीर में कठोरता आना , आवाज में भारीपन आना , लैंगिक अंगों का पूर्ण विकास तथा किशोरी में भी शारीरिक परिवर्तन, मासिक धर्म की शुरुआत होना इस बात का परिचय होता है कि उनमें परिपक्वता आ चुकी है, साथ ही उनके शरीर से एक विशेष प्रकार की गंध आने लगती है,जो उनमें कोतुहल पैदा करती है। इस कारण उनमें कई **विशेषताएं पैदा होने लगती हैं** -

(i) शारीरिक व मानसिक विकास अधिकतम हो जाता है।
(ii) दिवास्वप्न –कई प्रकार की कोरी कल्पनाएँ करने लगते हैं।
(iii) व्यक्तिगत / घनिष्ठ मित्रता
(iv) संवेगात्मक अस्थिरता
(v) नायक / वीर पूजा
(vi) समाजसेवा की भावना
(vii) स्वतंत्रता / विद्रोह की भावना
(viii) आत्मसम्मान / आत्म चेतना की भावना
(ix) काम प्रवृत्ति की परिपक्वता
(x) ईश्वर / धर्म में विश्वास
(xi) आर्थिक सुरक्षा व दिखावटी पन की भावना
(xii) विषमलिंगी की ओर आकर्षण
(xiii) नैतिक विकास होता है।
(xiv) विरोधी भाव उत्पन्न होने लगता है।

शिक्षा देना-

(i) निर्देशन व परामर्श निरन्तर देना चाहिए।
(ii) अभिप्रेरणा देना – (सकारात्मक रूप में)
(iii) व्यक्तिगत उदाहरण देना
(iv) शारीरिक व मानसिक विकास कराना
(v) संवेगात्मक विकास कराना
(vi) व्यवसायिक शिक्षा का निर्देशन
(vii) जीवन कौशल सिखाना
(viii) जीवन दर्शन की शिक्षा
(ix) महत्व को मान्यता
(x) आदर्शशील बनाना

बाल विकास के विभिन्न आयाम

मानसिक विकास – बाल विकास की प्रक्रिया में सामान्य रूपों में जिसे हम बौद्धिक विकास कहते हैं। मनोवैज्ञानिक परिक्षेत्रों में मानसिक विकास होता है।

- किसी बालक, बालिकाओं में प्रारम्भिक समय में मानसिक शक्तियों का हृदय होता है। तत्पश्चात मानसिक शक्ति या पुष्टि होती है। धीरे-धीरे करके अपने चरण तक पहुँच जाता है।
- मानसिक प्रक्रिया के विकास के अन्तर्गत जो मस्तिष्क का कार्यभार होता है। उसे प्रमस्तिष्क कहते हैं।
- मानसिक विकास को जन्म के समय प्रमस्तिष्क का 50% भाग ही विकसित होता है। तथा शेष 50% भाग किसी

- इन संवेगो में जब पुण्टता के भाव आ जाते है। तब ये संवेग भाव रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।
- संवेगात्मक परिक्षेत्रों में बालक तथा बालिकाओं में शारीरिक तथा मानसिक दोनों ही पक्ष सम्मिलित होते हैं।

शैशवावस्था में सांवेगिक विकास - शैशवावस्था के काल में संवेगात्मक विकास के परिक्षेत्रों में यह कहा जाता है। किसी भी बालक में संवेगात्मक विकास की क्रिया शैशवावस्था से ही सम्मिलित रहती है। तथा उनमें क्रमिक विकास होता रहता है।

शैशवावस्था के संवेगात्मक विकास के परिक्षेत्रो में ब्रीजेज का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है। जिनके अनुसार जन्म के समय किसी भी बालक मे केवल उत्तेजना होती है। जबकि 2 वर्ष की अवस्था में किसी बालक या बालिका में संवेगों का पूर्ण विकास हो जाता है ।

जन्म के समय	***उत्तेजना***
3 माह की आयु में	उत्तेजना, कष्ट, प्रसन्नता
6 माह की आयु में	उत्तेजना, कष्ट, प्रसन्नता, भय, घ्रण्णा, क्रोध
12 माह की आयु में	उत्तेजना, कष्ट, प्रसन्नता, भय, घ्रण्णा, क्रोध आनंद, स्नेह, ईर्षा
24 माह की आयु में	उत्तेजना, कष्ट, प्रसन्नता, भय, घ्रण्णा, क्रोध आनंद, स्नेह, ईर्षा, उल्लास

इसके अतिरिक्त मैकडूगल ने 14 मूल प्रवृत्तियों के आधार पर 14 संवेग स्वीकार किये ।

- शैशवावस्था के प्रारम्भिक समय में तीव्रता रहती है। लेकिन धीरे-2 तीव्रता समाप्त हो जाती है। जैसे- 6-7 माह का बालक जब तक रोता है। जब तक उसकी भूख शांत नहीं हो जाती ।
- जबकि 6-7 वर्ष का बालक ऐसा व्यवहार नहीं करता है
- शैशवावस्था में संवेगात्मक व्यवहार शिशु के रोने चिल्लाने, हाथ पकड़ने आदि से प्रकट होता है।
- सिग्मण्ड फ्राइड के अनुसार, शैशवावस्था में बालक होता है। जिसे आत्मप्रेम या आत्मकेंद्र कहा जाता है। जो आगे चलकर लडको को odipus Complex (मात् प्रेम पित्र विरोध) एवं लड़कियों मे Electra Complex (पितृ प्रेम मात् विरोध) की भावना आ जाती है।

बाल्यावस्था सांवेगिक विकास

बाल्यावस्था के प्रारम्भिक समय में बालक एवं बालिकाओं में संवेग बने रहते हैं। जबकि उत्तर कालीन समय में ये संवेग धीरे-2 भावों के रूप में परिवर्तित होने लगते हैं। बाल्यावस्था वो काल है जहां पर बालक बालिकाओ में वास्तविक जीवन सामाजिक विकास प्रारम्भ हो जाता है। जिससे समूह का विकास हो जाता है। जिसका स्पष्ट प्रभाव बालक, बालिका को सामूहिक क्षेत्रों पर पड़ता है।

- बाल्यावस्था के संवेगात्मक विकास को बालको का अनोखा काल कॉल एण्ड बुश ने कहा था ।
- बाल्यावस्था के काल में बालक या बालिकाओं के संवेगों में अधिक निश्चितता एवं कम उग्रता आ जाती हैं ।
- इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओं में शिष्टता के संवेग आ जाते हैं। साथ ही बालक एवं बालिकाओं में संवेगो को द्रवित करने की शक्ति का विकास हो जाता है ।
- सांवेगिक, विकास में बाल्यावस्था के काल में, बालक एवं बालिकाओं में ईर्ष्या तथा द्वेष इत्यादि संवेगों का विकास हो जाता है।
- बाल्यावस्था के भावात्मक विकास के परिक्षेत्रों में विद्यालय तथा शिक्षकों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बाल्यावस्था के प्रारम्भिक समय मे इच्छा पूर्ति न होने पर बालक तथा बालिकाएं क्रोध से ग्रसित हो जाते हैं। जबकि उत्तर कालीन समय में स्वतन्त्रता हनन के पश्चात साँवेगिक विकास के परिक्षेत्रों में लड़के क्षुब्ध एवं उदास हो जाते हैं। जबकि लड़किया रोने लगती है।
- बाल्यावस्था में कब, क्यो, कहा कैसे इत्यादि संवेगो का जन्म हो जाता है । जिस कारण बाल्यावस्था के काल में जिज्ञासा की प्रवृति तीव्र होती है। तथा बालक एवं बालिकाओ के जीवन को परिपृच्छा काल कहा जाता है।

विकास के सिद्धान्त

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक विकास
3. सामाजिक विकास
4. संवेगिक विकास
5. नैतिक विकास
6. चारित्रिक विकास
7. भावात्मक विकास

❖ विकास के पहलू

शारीरिक विकास :-

i. शैशव अवस्था में शारीरिक विकास :-

- भार :-जैसे जन्म के समय लड़के का बजन अनुमानत : 7.15 पौन्ड व लड़की का बजन 7.13 पौन्ड, 5, वर्ष तक 38 से 43 पौण्ड हो जाता है। (औसत भार 7 पौण्ड)
- लम्बाई :- जन्म के समय अनुमानत: लड़के की - 20.5 ईच, लड़की की - 20.3 ईच। (औसत लम्बाई 50 सेमी.)
- सिर व मस्तिष्क का बजन :- कुल शरीर भाग का 25 प्रतिशत या 1/4
  वजन - 350 ग्राम ।
  विकसित 90 प्रतिशत 5 वर्ष तक।
- हड्डीयां - 270, कोमल व लचीली होती है।

- **दांत** - दूध के दांत 6 महीने से शुरू होते है, नीचे के दांत पहले आते हैं, 4 वर्ष तक कुल 20 हो जाते हैं जिन्हें दूध के या अस्थायी दांत कहते है। बालक की अपेक्षा बालिका में दांत जल्दी आते है। दांत जल्दी निकलने में केल्शियम (CI)उपयोगी होता है।
- मांसपेशिया :- कुल शरीर भार का जन्म के समय 23 प्रतिशत होती हैं।
- हृदय की धड़कन :- जन्म के समय 1 / 140 बार, 6 वर्ष तक 1/100 हो जाती हैं।

ii. बाल्यावस्था में शारीरिक विकास :-

- भार :- 80 से 90 पॉण्ड के मध्य, 10 वर्ष के बाद लड़कियों का वजन बढता है।
- लंबाई :- 6 - 12 के मध्य 2 - 3 ईंच की वृद्धि होती हैं।
- सिर व मस्तिष्क का वजन :- 1260 ग्राम / 95 प्रतिशत विकसित 10 वर्ष तक।
- हड्डीयां :- कुल 350
- दांत :- स्थायी दांत संख्या 27 से 28
- मांसपेशियां :- कुल शरीर भाग का 27 प्रतिशत, 9 वर्ष तक
- हृदय की धड़कन :- एक मिनट में 85 बार।

iii. किशोरवस्था में शारीरिक विकास :-

- भार :- लड़के का वजन लड़की की अपेक्षा 25 पॉण्ड अधिक होता हैं।
- लंबाई :- लड़कियों की लंबाई 16 वर्ष तक, लड़कों की लंबाई 18 से 21 वर्ष तक, सर्वाधिक लंबाई इस अवस्था में बढ़ती हैं।
- सिर व मस्तिष्क का वजन :- 1350 ग्राम (1200 से 1400) 100 प्रतिशत विकास।
- हड्डीयां - कुल 206
- दांत :- प्रज्ञा दंत - 32
- मांसपेशियां :- कुल शरीर भाग का 44 प्रतिशत।
- हृदय की धड़कन :- 72 बार।

शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

1. वंशानुक्रम।
2. वातावरण।
3. पौष्टिक भोजन।
4. नियमित दिनचर्या।
5. खेलकुद व योग का प्रभाव।

मानसिक विकास :-

i. शैशव अवस्था में मानसिक विकास :-

मानसिक क्रियाएं :- संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, तर्क, चिन्तन, कल्पना, स्मृति, ध्यान, भाषा।

जॉन लॉक के अनुसार :- जन्म के समय बालक का मन मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है, जिस पर वह अपना अनुभव लिखता है।

- 1 वर्ष का बालक :- 3 से 4 शब्द बोलना, दूसरों की क्रियाओं का अनुकरण करना।
- 2 वर्ष का बालक :- 100 से 200 शब्द, दो शब्दों का वाक्य बनाना।
- 3 वर्ष का बालक :- नाम बताना व रेखाएं खींचना, 896 शब्द।
- 4 वर्ष का बालक :- लिखना शुरुआत कर देगा, वस्तुओं को क्रमबद्ध रूप से रखना, 1540 शब्द।
- 5 वर्ष का बालक :- 10-11 शब्दों का वाक्य बनाएगा, रंगों को पहचानना।

ii. बाल्यावस्था में मानसिक विकास :- क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :- बालक जब 6 वर्ष का हो जाता है तो उसकी मानसिक शक्तियों का विकास अधिकतम हो जाता हैं।

- 6 वर्ष का बालक :- 14 तक गिनती करना, सरल प्रश्नों के उत्तर देना , शरीर के अंगो के नाम बताना।
- 7 वर्ष का बालक :- तुलना व सामान्यता बताना।
- 8 वर्ष का बालक :- कविता व कहानियों को दोहराना 16 शब्दों का वाक्य बनाना।
- 9 वर्ष का बालक :- दिनांक, समय तथा सिक्कों का ज्ञान। देखी गई फिल्म की 60 प्रतिशत बातें बता देती हैं।
- 10 वर्ष का बालक :- तीन मिनट में 60 - 70 शब्द बोल देना, तथा दैनिक जीवन के नियम तथा परम्पराओं का ज्ञान, 5400 शब्द।
- 11 वर्ष का बालक :- तर्क, जिज्ञासा, निरीक्षण शक्ति का विकास।
- 12 वर्ष का बालक : - समस्या समाधान तथा निर्णय करने की शक्ति का विकास। 7200 शब्द

iii. किशोरावस्था में मानसिक विकास :-

वुडवर्थ के अनुसार :- किशोरवस्था में मानसिक विकास उच्चतम सीमा तक पहुंच जाता हैं।

- बुद्धि का अधिकतम विकास - 15 से 16 वर्ष।
- मानसिक स्वतंत्रका का विकास।
- तर्क, चिंतक, कल्पना, स्मृति, ध्यान का अधिकतम विकास होता हैं।

मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

1. वंशानुक्रम।
2. वातावरण।
3. परिवार के सामाजिक व आर्थिक स्थिति।
4. माता - पिता की शिक्षा।
5. शारीरिक स्वास्थ्य। अरस्तु :- स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता हैं।
6. शिक्षक व विद्यालय का वातावरण।

व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन से आदान-प्रदान व्यक्त करता है।

9. **रैक्स रॉस–** व्यक्तिव व्यक्ति के मान्य व अमान्य गुणों का कुंज / संगठन है।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष के तौर पर स्पष्ट है कि किसी भी व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक गुणों को सम्मिलित रूप से व्यक्तित्व कहा जा सकता है , जो लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ते है।

सन 1937 ई0 में प्रोफेसर G W AalPort ने व्यक्तित्व लगभग 50 परिभाषाओं का अध्ययन करके निम्नलिखित परिभाषा प्रस्तुत की।

"व्यक्तित्व के व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ उसका अदितीय समायोजन निर्धारित करता है"

1. आलपोर्ट महोदय की व्यक्तित्व की इस मनो तथा शारीरिक अर्थात् आन्तरिक तथा वाहय गुणो को समिल्लित किया है।
2. किसी भी बालक के व्यक्तित्व के गुणों को गत्यात्म्क (परिवर्तन) संगठनात्मक प्रवृति के होते है
3. किसी भी बालक के व्यक्तित्व का प्रदर्शन उसके वातावरणीय प्रक्रियाओं के समायोजन से होता है।

❖ **<u>व्यक्तित्व की विशेषताएं –</u>**

1. **आत्म चेतना –** यह व्यक्तित्व की पहली और मुख्य विशेषता है। आत्म चेतना वह शक्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सम्बन्ध को जानता है। जब व्यक्ति यह सम्बन्ध जान जाता है तो वह दूसरे व्यक्ति क्या विचार रखते है, ये सोचता है।
2. **समाजशीलता** - समाज से अलग मानव और उसके व्यक्तित्व की कल्पना असंभव है। मानव में आत्मचेतना व समाजीकरण का विकास तभी होता है जब वह समाज के अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर क्रिया और अन्तः क्रिया करता है। अतः व्यक्तित्व में सामाजिकता की विशेषता अनिवार्य है।
3. **गत्यात्मकता** - अच्छे व्यक्तित्व के व्यक्ति के व्यवहार में स्थिरता नही होती है। वह स्वयं विश्लेषण करके आदर्श व विचारों को धारण करता है।
4. **दृढ इच्छा-शक्ति (strong will power) -** यह शक्ति व्यक्ति को जीवन की कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए अपने-अपने व्यक्तित्व को उत्कृष्ठ बनाने की क्षमता प्रदान करता है।
5. **अनुकूलन / समायोजन -** एक अच्छा व्यक्ति वह होता है जो बाह्य बातावरण के साथ आन्तरिक जीवन में भी सामंजस्य स्थापित करता है।
6. संवेग स्थिरता
7. विकास की निरंतरता
8. अनुपम (Unique)
9. महत्वाकांक्षी
10. लक्ष्य निर्देशित व्यवहार
11. परिश्रमी, साहसी
12. विश्वसनीय, बुद्धिमान

<u>व्यक्तित्व के प्रकार</u>

मनोविज्ञान की प्रक्रिया में अलग-2 मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के अलग- 2 प्रकार स्वीकार किये। सबसे पहला व्यक्तित्व के प्रकार थियोफरेस्ट्स का था जो अरस्तु के शिष्य थे।

(1) व्यक्तित्व का पहला वैज्ञानिक वर्गीकरण हिपोक्रेट्स द्वारा 400 ई.पू. में दिया गया, जो कि द्रव्य (Fluid) पर आधारित है। व्यक्तित्व के चार प्रकार बताएं –

1. काला पित्त - निराश, दुखी, उदास
   (प्रधान तत्व –निराशावादी)
2. पीला पित्त - बैचेन ,चिड़चिड़ा, क्रोधी
   (प्रधान तत्व - गुस्सैल)
3. श्लेष (कफ)- निष्क्रिय ,शांत
   (प्रधान तत्व-विरक्त)
4. रक्त - प्रसन्न उत्साही ,खुश
   (प्रधान तत्व –आशावादी)

(2) चरक संहिता के अनुसार व्यक्तित्व के तीन प्रकार बताएं हैं-

(1) वात - चंचल , स्फूर्तिवान
(2) पित्त – आनंद युक्त
(3) कफ - शांत , सुस्त

(3) भारतीय दर्शन के अनुसार (सांख्य दर्शन) गुणों के आधार पर प्रकार बताएं गये हैं -

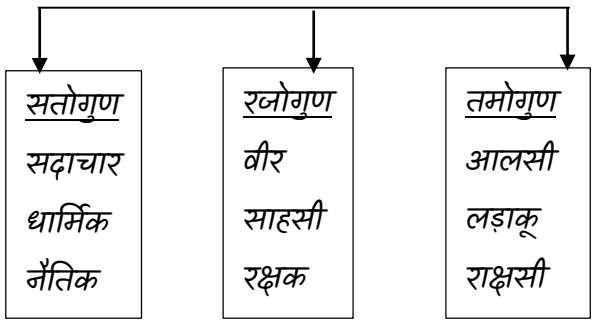

(4) शारीरिक दृष्टिकोण के आधार पर

(A) क्रेशमर का वर्गीकरण- इसने शरीर के रचना के आधार पर चार प्रकार बताए है। जिनको 1926 में अपनी पुस्तक Physique and character में लिखा है।

(i) स्थूलकाय / साइक्लोआड - गोलाकार, खुशमिजाज[Pichic]

(ii) सुडौलकाय / पृष्टकाय / एथेलेटिक (Athaletics)- सन्तुलित शरीर, आशावादी

(iii) कृशकाय / सिनोआड [Asthanic]

- लम्बा कद, दुबले -पतले, चिडचिड़ा

(iv) विशालकाय /मिश्रितकाय [Din Plastic]

- इसमें तीनों गुणों का मिला-जुला रूप है।

(B) शेल्डन का वर्गीकरण - शरीर संगठन के आधार 3 प्रकार के व्यक्तित्व बताए। जिसे सोमैटोटाइप सिद्धांत (1940 में) कहा गया।

(i) एक्टोमार्फी / लम्बाकार / सेरी ब्रोटोनिया - लम्बा कद, दुबले-पतले निराशावादी

(ii) मेसोमार्फी / आयताकार / सोमेटोटोनिया - सुडौल शरीर, बहादुर, आक्रमक

(iii) एण्डोमार्फी / गोलकार/ विमटोटोनिया - आरामप्रिय, खुशमिजाज, खाने - पीने का शौकीन

(5) युंग का वर्गीकरण - युंग ने मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के 2 प्रकार बताएं लेकिन कुछ समय पश्चात् इन्होंने अंतर्मुखी तथा वहिर्मुखी दोनों प्रकृतियों को मिलाकर व्यक्तित्व का एक अन्य उभयमुखी प्रकार भी स्वीकार किया जिसके कारण इनके तीन प्रकार हो गये-

1. अंतर्मुखी 2. बहिर्मुखी 3. उभयमुखी

इस वर्गीकरण को सूचना संसाधन मॉडल कहते है।

अंतर्मुखी	**बहिर्मुखी**
इस प्रकार के व्यक्ति अपने आप में अधिक रुचि रखते हैं।	इस प्रकार के व्यक्ति के लक्षण, आदत, भाव ब्राह्य रूप से प्रकट होते हैं।
विशेषताएं	**विशेषताएं**
आत्मकेंद्रिता सरल स्वभाव मितभाषी सामाजिकता का अभाव आदर्शवादी नेतृत्व अभाव एकांतवासी जैसे-लेखक, वैज्ञानिक	मिलनसार खुशमिजाज उत्तम भाषणवादी सामाजिक यथार्थवादी नेतृत्व क्षमता समायोजन उत्तम

Note - अभयमुखी व्यक्तित्व - नेयमान व यामोर्जकी ने 1942 में एक तीसरा प्रकार उभयमुखी बताया जो अंतर्मुखी व बहिर्मुखी का मिश्रण होता है।

(7) स्प्रेंगर का वर्गीकरण -

यह समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है। जिसमें 6 प्रकार बताए हैं। सन् 1928 में पुस्तक Types of Men लिखी।

1. सैद्धान्तिक -इसके अंतर्गत कवी, लेखक, दार्शनिक आते है।
2. आर्थिक - व्यापारी , दुकानदार , उद्योगपति ।
3. सामाजिक - इस प्रकार के व्यक्ति में दया , सहिष्णुता, सहानुभूति प्रबल होती है ।
4. राजनीतिक - ऐसे लोग राजनीती , प्रशासन म भाग लेते हैं ।
5. धार्मिक - ऐसे लोग धर्म ,परम्परा में विश्वास रखते हैं ।
6. कलात्माक - कला, कौशल में निपुण होते है।

(8) फ्रीडमैन व रोजनमैन - इन्होंने व्यक्तित्व संबंधी गुणों के आधार पर व्यक्तित्व को 2 प्रकार के समूह में A व B में वर्गीकृत किया।

टाइप A	**टाइप B**
संवेग अस्थिरता	संवेगरूपी
चिड़चिड़ा	तनावमुक्त
एकांतप्रिय	समायोजी व्यक्ति
आक्रामक	शांतस्वभाव

(9) कैनन के अनुसार - कैनन ने अन्त स्रावी ग्रंथियों के आधार पर व्यक्तित्व के निम्न लिखित 3 प्रकार बताये हैं-

1. **थाइरॉइड ग्रन्थि वाले व्यक्तित्व**- इस व्यक्तित्व वाले बालकों में थाइरोक्सिन नामक स्राव होता है। जो किसी बालक के शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं इसके अभाव मे बालक मंदबुद्धि, बौना , दुर्बल हो जाता है।
2. **पिट्यूटरी ग्रन्थि वाले बालक** - इसे मास्टर ग्रन्थि भी कहते हैं तथा इसमें किसी के व्यक्तित्व का आनुपातिक स्त्राव आवश्यक है। क्योंकि इसके अधिक स्राव से व्यक्ति अधिक लम्बा हो जाता है।
3. **एड्रीनल ग्रन्थि वाले बालक**- इस ग्रन्थि का बालक के व्यक्तित्व व बालक पर आन्तरिक रूप से प्रभाव पड़ता है। इसके अधिक स्राव होने पर बालक झगडालू , क्रोधित, लड़ाकू हो जाता है।

(10) सिग्मण्ड फ्राइड के अनुसार

1. मौखिक कामुक- इस प्रकार के व्यक्तित्व का बालक शरीर के अंगों से प्रेम करता है, उन्हें चूसता है तथा शरीर को काटने की प्रक्रिया करता है।
2. मौखिक निष्क्रिय- इस प्रकार के व्यक्तित्व का बालक आशावादी तो होता है लेकिन किसी कार्य को करने के लिए अपनी क्रिया में संलग्न होकर अपने विचारों से कार्य करता है।
3. मौखिक निर्दयी - इस प्रकार के व्यक्तित्व का बालक मुख्य रूप से निराशावादी प्रवृत्ति को अपनाता है और उसके व्यवहार में मुख्य रूप से क्रोधी एवं झगडालू प्रवृतियां सम्मिलित होती

(11) ऑलपोर्ट के अनुसार -

आल पोर्ट ने शीलगुणों के आधार पर व्यक्तित्व के निम्नलिखित 3 प्रकार स्वीकार किये।

31. **ऑटिज्म (स्वलीनता)**

उपनाम:- आत्ममोह / स्वपरायणता

यह आंतरिक विकासात्मक प्रकार का विकार है जिसमें बालक स्वयं में जीना पसंद करता है तथा दूसरे लोगों से प्रभावित नहीं होता अकेले रहना पसंद करता है। ऑटिज्म के लिए अनुप्रयुक्त व्यवहार विश्लेषण का प्रयोग किया जाता है ।

इसकी जानकारी 20 वीं सदी तक नहीं थी परन्तु 21 वीं सदी में बहुत जागृति आचुकी है ।

लियो कैनर ने सबसे पहले इस विकार को पहचानने का कार्य किया ।

2007 से 2 अप्रैल को इसके लिए "विश्व ऑटिज्म दिवस" घोषित किया गया है ।

ऑटिज्म के लक्षण – जवाब नहीं देना, कम बोलना, इशारों में समझना, हकलाना, अकेले रहना, मित्रता नही करना, बार- बार एक ही व्यवहार करना, कपड़े, भोजन खिलौने आदि को सूंघना / चाटना, अंगूठा पीना ।

ऑटिज्म के प्रकार –

1. क्लासिकल – यह सम्प्रेषण प्रकार का विकार है। इसमें जवाब नहीं देना, कम बोलना, इशारों में समझना, हकलाना आदि आते है।
2. एसपर्गर – सामाजिक विकार है जिसमें बालक सामाजिकता से परे रहता है , अकेले खेलता है मित्रता नहीं करना , किसी के पास भी चले जाता।
3. परेसिव – उपर्युक्त दोनों प्रकार के विकार इसमें शामिल होते है।

note :- 3 वर्ष की आयु से पहले इसके लक्षण प्रकट होने लगते हैं लेकिन प्रभाव 3 वर्ष के बाद दिखाई देते हैं ।

अध्याय – 10

अधिगम

- ❖ **अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना , अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक**
- ❖ **अधिगम के सिद्धांत एवं इनके निहितार्थ**
- ❖ **बच्चे सीखते कैसे हैं?**
- ❖ **अधिगम की प्रक्रियाएं चिंतन , कल्पना एवं तर्क**
- ❖ **अभिप्रेरणा**

- **अधिगम का अर्थ –**सामान्यतया हम सीखने को अधिगम मान लेते हैं परन्तु वास्तविक अर्थों में केवल सीखना अधिगम नहीं है । सीखने के बाद यदि वह व्यवहार, हमारे व्यवहार में स्थाई हो जाता है, वह अधिगम कहलाता है ।

अधिगम की प्रक्रिया विभिन्न परिक्षेत्रों में केवल सीखने के रूप में प्रयोग में लायी जाती है जो व्यवहारिक एवं मनोवैज्ञानिक परिक्षेत्रों में सीखने, सिखाने दोनों रूपो को स्पष्ट करती है।

अधिगम की प्रक्रिण के पश्चात बालक को यह ज्ञान हो जाता है। क्या सत्य है अथवा क्या असत्य है, सही क्या गलत है। कोई बालक एवं बालिका अधिगम की प्रक्रिया के पूर्व ही विभिन्न क्रियाओं का ज्ञान तो प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन अधिगम के पश्चात उनके व्यवहार में वांछित परिवर्तन आ जाते हैं ।

अधिगम अंग्रेजी का Learning का हिन्दी रुपान्तरण है जिसका अर्थ है आगे की और बढ़ना ।

अधिगम की प्रक्रिया को नि०लि० रूपों में स्पष्ट किया जाता है ।

K	B	B
knowledge	Behaviour	Believe
ज्ञान	व्यवहार	विश्वास या मूल्य

Change in Learning

1. ज्ञान में परिवर्तन ही अधिगम है ।
2. व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है ।
3. विश्वास था मूल्यों में परिवर्तन ही अधिगम है।

अधिगम की प्रक्रिया में किसी बालक में परिपक्वता होती है। साथ ही अधिगम की प्रक्रिया के व्यवहार से प्रदर्शित होती है।

अर्थ :- व्यवहार में वांछित परिवर्तन ही अधिगम है।

परिभाषाएं :-

- ➢ **गेट्स व अन्य के अनुसार -** प्रशिक्षण व अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।
- ➢ **मॉर्गन - किंग के अनुसार -** अभ्यास / अनुभूति के फलस्वरूप व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन अधिगम कहलाता है।

- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** – आदतों, ज्ञान तथा अभिवृत्तियों को अर्जन करना ही अधिगम है।
- **वुडवर्थ के अनुसार** – सीखना विकास की प्रक्रिया है। एक बालक या व्यक्ति में नियमित रूप से जो परिपक्वता की दिशा में परिवर्तन आते हैं ,विकास को दर्शाते हैं तथा इन्हें ही स्थायी होने पर अधिगम की संज्ञा दी जाती है ।
- **स्कीनर के अनुसार** – व्यवहार के अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया ही अधिगम है।
- **स्कीनर के अनुसार** :- व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया ही अधिगम है।
- **गिलफोर्ड के अनुसार** – व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।
- **पील महोदय के अनुसार**- सीखना व्यक्ति में एक परिवर्तन है जो उसके वातावरण के परिवर्तनों के अनुसरण में होता है।
- **रिली व लेविस के अनुसार** - अभ्यास या अनुभूति से व्यवहार में धारण योग्य परिवर्तन को सीखना कहा जाता है।
- **सारटेन के अनुसार**- प्रतिदिन होने वाले नए-नए अनुभवों के कारण व्यवहार में आने वाला स्थायी परिवर्तन ही अधिगम है।

अधिगम की विशेषताएँ

1. अधिगम ही विकास है।
2. अधिगम ही समायोजन है।
3. अधिगम अनुभवों का संगठन है।
4. अधिगम स्व उद्देश्य है।
5. अधिगम सृजनशील है।
6. अधिगम क्रियाशील है।
7. अधिगम व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों होते हैं।
8. अधिगम में उद्दीपक तथा अनुक्रिया का संबंध होता है।
9. अधिगम अनुभवों व परीक्षणों का परिणाम है ।
10. अधिगम व्यवहार में परिवर्तन है ।
11. अधिगम सदैव अर्जित व्यवहार है ।
12. अधिगम उत्पादन है ।
13. अधिगम सार्वभौमिक है ।
14. अधिगम एक प्रकार से स्थाई सीखना है ।
15. अधिगम एक मानसिक व विवेकपूर्ण प्रक्रिया है ।

नोट – अधिगम की प्रक्रिया के अन्तर्गत नि० लि० प्रमुख 4 तत्व होते हैं।

उद्दीपक (Stumulus) अनुक्रिया (Responce)

अभिप्रेरणा(Motivation) पुनर्बलन Reinforcement

<u>अधिगम के प्रकार</u> :-

1. **ज्ञानात्मक** – इसमें हम तीन प्रकार के अधिगम की क्रियायों को सम्मिलित कर सकते हैं –

- **प्रत्यक्षात्मक सीखना** – इसमें बालक किसी वस्तु को सामने प्रत्यक्ष देखकर सीखता है ।
- **प्रत्यात्मक सीखना** – इसमें बालक अमूर्त वस्तुओं के द्वारा तर्क ,चिंतन व कल्पना के आधार पर सीखता है।
- **साहचर्यात्मक अधिगम** – जब बालक पुराने ज्ञान का उपयोग करते हुए नये ज्ञान को सीखता है ।

2. **भावात्मक** – ये अधिगम बालकों की भावनाओं से सम्बंधित होता है । जिसमें बच्चे रुचि लेते हुए आनंद से सीखते हैं ।
3. **क्रियात्मक**- इसमे किसी कला या कौशल में निपुणता प्राप्त की जाती है । संगीत , नृत्य , चित्रकारी आदि इसमें आते हैं ।

❖ **अमेरिकी विद्वान रॉबर्ट गैने ने 8 प्रकार** के अधिगम बताये हैं जिन्हें उन्होंने एक सोपानकी के रूप में प्रस्तुत किया है –

8. समस्या समाधान अधिगम
7. सिद्धांत अधिगम
6. प्रत्यय / संप्रत्यय अधिगम
5. बहुविभेदन अधिगम

} उच्च श्रेणी

4. शाब्दिक अधिगम
3. श्रंखला अधिगम
2. उद्दीपन अनुक्रिया
1. संकेत अधिगम

} निम्न श्रेणी

एक से चार तक के अधिगम में तर्क व चिंतन का अभाव रहता है इसलिए ये निम्न श्रेणी में सम्मिलित किया गया है तथा 5 से 8 तक के अधिगम में तर्क व चिन्तन पाया जाता है इसी लिए इन्हें उच्च श्रेणी में रखा जाता है ।

<u>अधिगम के अनुक्षेत्र</u>

(i) **संज्ञानात्मक अनुक्षेत्र** - अधिगमकर्ता के संज्ञानात्मक व्यवहार में परिवर्तन लाना । विभिन्न मानसिक व बौद्धिक क्रियाएं जैसे- सोचना, विचारना, कल्पना करना, समझ, निर्णयन, बोध, तर्क आदि का संपादन व अपेक्षित परिवर्तन लाने का श्रेय इसी संज्ञानात्मक अनुक्षेत्र में आता है।

इसमे कुल छः श्रेणियां हैं –

1. ज्ञान – आंकड़े ज्ञात / जारी करना

उदहारण– परिभाषित करना, वर्णन करना, पहचान , मिलान ,सूचियाँ ,रूप रेखा याद करना

2. समझ /बोध –अनुवाद, प्रक्षेप, निर्देश, व्याख्या करना,अंतर, अनुमान, सारांश, उदाहरण, अनुवाद करना ।

3. अनुप्रयोग– अनुप्रयोग, गणना, निर्माण, रूपांतरण, खोज, बदलाव करना ।

4. विश्लेषण – तुलना करना, विनिर्माण, चित्र निकालना।

5. संश्लेषण – एकत्रित करना , सृजित करना, संशोधन, योजना बनाना, संगठित करना ।

6. मूल्यांकन – इसमे निष्कर्ष , आलोचना, आदि आते हैं।

1. थॉर्नडाइक का उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत (1913)

उपनाम- प्रयास व त्रुटी का सिद्धांत /संयोजनवाद का सिद्धांत / संबंधवाद का सिद्धांत / प्रयत्न व भूल या बंध का सिद्धांत

- अधिगम की प्रक्रिया में उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत प्रयास एवं त्रुटि के सिद्धांत का प्रतिपादन थॉर्नडाइक ने किया। थॉर्नडाइक ने उद्दीपक को अनुक्रिया संबंध कहा जिस आधार पर इसे सम्बन्धवाद या SR Bond Theory कहते हैं ।
- इस सिद्धांत में बिल्ली पर शोधकार्य करते हुए भूखी बिल्ली को पिंजरे में बंद कर दिया और उसके बाद भोजन रख दिया।
- भोजन को देखकर बिल्ली ने उछल-कूद की जिससे इसका हाथ लीवर पर पड़ गया और पिंजरा खुल गया जिससे बिल्ली ने भोजन खा लिया ।
- यह प्रक्रिया लगातार दोहराई गई जिससे अधिगम प्रक्रिया में लिया गया समय तथा असफल प्रयासों की संख्या निरंतर कम होती गई ।
- अपने इस परीक्षण में थॉर्नडाइक ने बताया कि भोजन (उद्दीपक) उछल - कूद (अनुक्रिया) के मध्य जब एक संबंध बन जाता है, तो उस विशिष्ट उद्दीपक के प्रस्तुत होने पर अधिगम कर्ता बार-बार प्रक्रिया दोहराता है, जिससे अधिगम की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है।

थॉर्नडाइक ने अधिगम सिद्धांत में निम्नलिखित नियम दिये।

सीखने के नियम

मुख्य नियम	**गौण नियम**
1. प्रभाव का नियम	1. बहु प्रतिक्रिया नियम
2. तत्परता का नियम	2. आंशिक क्रिया का नियम
3. अभ्यास का नियम	3. सदृश्यता का नियम
	4. मानसिक विन्यास का नियम
	5. साहचर्य का नियम

मुख्य नियम :-

1. **तत्परता का नियम** - इस नियम के अनुसार अधिगम की प्रक्रिया में किसी कार्य को सीखने के लिए अधिगम कर्ता स्वयं से तत्पर होता है जिससे उद्दीपक अनुक्रिया संबंध मजबूत हो जाता है तथा अधिगम की प्रक्रिया अच्छी होती है। जबकि इसके अभाव में अधिगम प्रक्रिया सही से नहीं हो पाती है।
   इस नियम के अनुसार जब किसी प्राणी में किसी कार्य के प्रति तत्परता होती है तो उसमे कार्य को करने के प्रति रुचि पैदा होती है , जिससे कार्य में सफलता मिलती है ।
   यहाँ तत्परता से अभिप्राय मानसिक तैयारी से है।
   उदारहण – मजदूर को खेत पर भेजा जा सकता है परन्तु काम करने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता ।
2. **अभ्यास का नियम** - इस नियम के अनुसार यदि कमजोर से कमजोर प्राणी को भी किसी व्यवहार को सीखने के लिए बार बार अभ्यास कराया जाता है तो वह प्राणी उस काम को आसानी से सीख लेता है ।यहाँ पर भी यह तय है की हम उसी कार्य का अभ्यास कर पाते हैं जो हमारे लिए उपयोग के होते हैं ।
   उदाहरण – मोहन अपनी कक्षा में प्रथम आता था परन्तु अब खेलो में अधिक ध्यान के कारण वह पिछड़ गया (क्योंकि अभ्यास छोड़ दिया)
3. **प्रभाव का नियम-** जब हम कोई कार्य करते हैं तो उसके परिणाम आते हैं और जो परिणाम आते हैं वो हमारे ऊपर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं । सकारात्मक परिणाम आने पर संतोष की तथा नकारात्मक परिणाम आने पर असंतोष की प्राप्ति होती है ।
   उदाहरण- एक बालक अपने दादा के पास ही रहना पसंद करता है (उसे आनंद व संतोष मिलता है)

गौण नियम :-

1. **बहु प्रतिक्रिया का नियम** – किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए भिन्न – भिन्न प्रकार से कार्य करना तथा निश्चित परिणाम प्राप्ति के लिए प्रतिक्रियाओं का उपयोग करना ।
   उदहारण – एक प्रतियोगी परीक्षा में सफल होने के लिए भिन्न – भिन्न प्रकार से प्रयास करता , कोचिंग क्लास लेता है ।
2. **आंशिक अनुक्रिया का नियम** –जब कोई कार्य एक साथ पूरा नहीं हो पाता तो उसे छोटे –छोटे टुकड़ों में / अंशों में विभाजित कर दिया जाता है।
   उदहारण – पाठ्यक्रम को इकाइयाँ में बांटकर पढ़ाना
3. **सादृश्यता का नियम** – जब एक व्यक्ति किसी कार्य को होते हुए देखता है और फिर वो देखे हुए व्यवहार के आधार पर स्वयं भी उसे कर लेता है।
   उदहारण – एक बालक किसी को साइकल चलाते देखता है और फिर खुद भी चलाने लगता है ।
4. **मानसिक विन्यास का नियम** –किसी भी कार्य के प्रति हमारी मानसिक स्थिति का होना चाहे नकारात्मक या सकारात्मक ।
   उदहारण – मन के हारे हार है मन के जीते जीत
5. **साहचर्य व्यवहार का नियम** – कोई व्यक्ति जब किसी के साथ रहता है तो उसमे भी उसका व्यवहार प्रकट होने लगता है ।
   जैसे – पालतू तोता मानव की भाषा सीख जाता है।

सिद्धांत की शिक्षा में उपयोगिता –

- बड़े तथा मन्द बुद्धि बालकों के लिए उपयुक्त है।
- इस सिद्धांत के द्वारा बालक में धैर्य व परिश्रम के गुणों का विकास किया जाता है।
- इस सिद्धांत के अनुभव से लाभ उठाने की उपयोगिता का विकास किया जा सकता है।
- यह सिद्धांत "करके सीखने "पर बल देता है।

- **उद्देश्य पूर्ति का सिद्धांत –** शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों को ही अपने उद्देश्य का ज्ञान होना चाहिए ।
  बलदेव भाटिया – बिना उद्देश्य ज्ञान के एक शिक्षक उस नाविक के समान है जिसे मंजिल का पता नहीं तथा उसके विद्यार्थी इस पतवार विहीन नाव के समान हिया जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी किनारे से जा टकरा सकता है ।
- लोचशीलता का सिद्धांत
- पुनरावृति का सिद्धांत
- राष्ट्रीयता / आनंद का सिद्धांत
- बालकेन्द्रिता का सिद्धांत
- अभ्यास , तत्परता , पुनर्बलन का सिद्धांत

सूक्ष्म शिक्षण (Micro teaching)

- सूक्ष्म शिक्षण का आरंभ अमेरिका के स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में 1961 में हुआ।
- यहाँ कीथ एचीसन जो कि W. ऐलिन के पास शोध कर रहे थे, ने समाचार पत्र में एक जर्मन वैज्ञानिक द्वारा छोटे
- video टेप रिकॉर्डर के अविष्कार को पढ़ा और उन्होंने video Taprecorde का प्रयोग शिक्षण कार्य में किया।
- 1963 में A.W ड्वाइड ऐलेन ने इस उपागम की व्याख्या करके इसे सूक्ष्म शिक्षण का नाम दिया।
- सूक्ष्म शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य छात्र - अध्यापक को शिक्षण द्वारा शिक्षण कौशलों का प्रशिक्षण देना।
- ऐलेन के अनुसार :- "सूक्ष्म शिक्षण वह शिक्षण प्रक्रिया है जो कक्षा के आकार एवं समय की दृष्टि से छोटे पैमाने पर आयोजित की जाती है।
- सूक्ष्म शिक्षण प्रविधि के अंतर्गत -
  पाठ का छोटा रूप, 5 - 10 छात्रों की संख्या होती है।

सूक्ष्म शिक्षण के सिद्धांत -

ऐलेन और रियान ने सूक्ष्म शिक्षण को पाँच मूल सिद्धांतों पर आधारित बताया है -

1. सूक्ष्म शिक्षण वास्तविक अध्यापन है।
2. इस प्रणाली में साधारण कक्षा अध्यापन की जटिलताओं को कम कर दिया है।
3. एक समय में किसी भी एक विशेष कार्य पर ही जोर दिया जाता है।
4. अभ्यास क्रम की प्रक्रिया पर अधिक नियंत्रण रखा जा सकता है।
5. प्रतिपुष्टि (Feedback) के प्रभाव की प्रविधि विकसित होती है।

सूक्ष्म शिक्षण की विशेषताएं

- इसमें कक्षा का आकार छोटा (5-10 विद्यार्थी) होता है।
- कालांश छोटा (5 - 10 मिनट) होता है।
- एक समय में केवल एक हो कौशल का विकास किया जाता है।
- इसमें पृष्टपोषण (Feedback) की व्यवस्था होती है जिससे अध्यापक को शिक्षण
- में सुधार लाने का अवसर मिलता है।
- इसमें पर्यवेक्षक और सहयोगियों का सहयोग लिया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया (Process)

1 शिक्षण योजना → 2 प्रतिपुष्टि →
3 पुनः पाठ योजना → 4 पुनः शिक्षण→ 5. पुनः प्रतिपुष्टि

शिक्षण अधिगम सामग्री

शिक्षण सहायक सामग्री शिक्षण का वह साधन है जिससे शिक्षार्थियों को किसी विषय का अधिगम करना बहुत आसान हो जाता है। अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक विविध एवं विभिन्न शिक्षण पद्धतियों एवं विधियों द्वारा अधिगम कराता है इस कार्य हेतु शिक्षण सहायक सामग्री अत्यंत उपयोगी होती है।

शिक्षण सहायक सामग्री के महत्व :-

- शिक्षण सहायक सामग्री शिक्षण को प्रभावशाली और ज्ञान को स्थिर बनाती है।
- इनके उपयोग से कक्षा की नीरसता खत्म हो जाती है।
- शिक्षण सहायक सामग्रियों के उपयोग से जटिल एवं सूक्ष्म ज्ञान को सरलता से समझा जा सकता है।
- इससे शिक्षार्थी अधिगम की प्रक्रिया में सक्रिय रहते हैं।

शिक्षण सामग्री के प्रकार :-

मनोवैज्ञानिक आधार पर शिक्षण सामग्री :-

1. **परम्परागत सामग्री :-** वे सहायक सामग्री जिनका प्रयोग प्रारंभिक समय से किया जा रहा है। जैसे कि - श्यामपट्ट, पुस्तकें, पत्र - पत्रिकाएँ आदि।
2. **श्रव्य - दृश्य सामग्री :-** सामाजिक अध्ययन में सबसे उपयोगी सामग्री, फिल्म, स्लाइड, एवीडायस्कोप (चित्र विस्तारक यंत्र)

तकनीकी आधार पर शिक्षण सामग्री :-

1. **कठोर उपागम :-** वे सहायक सामग्री जिसको बनाने और उपयोग करने के लिए तकनीकी ज्ञान की आवश्यक होती है।
   जैसे - Projector, फिल्म पट्टियां (Flim Strip), Computer अध्यापन मशीन आदि।
2. **मृदुल उपागम :-** वे सहायक सामग्री जिन्हे अध्यापक स्वयं बनाकर प्रयोग कर सकता है।
   जैसे :- चित्र, रेखाचित्र, चार्ट, ग्राफ, मानचित्र, पोस्टर, प्रतिमान आदि।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/hs2x82 1 web.- https://rb.gy/m9e4br

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
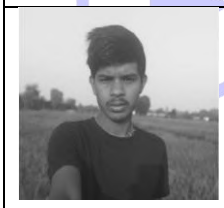	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
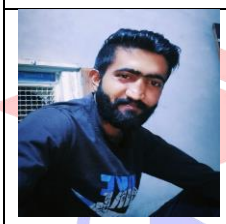	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others......

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/hs2x82

Online Order करें - https://rb.gy/m9e4br

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO